प्रभात खबर

27th November, 2016

एक शवदान से आठ को जीवनदान

- बंगाल चेंबर ऑफ कॉमर्स में शवदान पर सेमिनार
- ब्रेन डेथ के बाद शव दान पर दिया गया जोर

कोलकाता. शवदान में भारत अन्य देशों की तुलना में काफी पीछे है. वहीं पश्चिम बंगाल भारत के दूसरे राज्यों की तुलना में काफी पीछे है. इस स्थिति में जागरूकता के लिए शनिवार को बंगाल चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री में एक सेमिनार का आयोजन किया गया. इस सेमिनार में बंगाल चेंबर ऑफ कॉमर्स की हेल्थ कमेटी तथा अपोलो ग्लेनिग्लस हॉस्पिटल के यूरोलॉजिस्ट डॉ अमित घोष, बंगाल चेंबर ऑफ कॉमर्स की हेल्थ कमेटी के चेयरमैन डॉ अरिंदम चंदा, अपोलो के नेफ्रोलॉजिस्ट विभाग के डॉ वीवी लक्ष्मी नारायणन समेत राज्य स्वास्थ्य विभाग के कुछ वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे. इस दौरान डॉ अमित घोष ने बताया कि ब्रेन डेथ के बाद शव दान से आठ लोगों को नया जीवन मिल सकता है. उन्होंने कहा कि ब्रेन डेथ के बाद शव दान करने वाले मृत शरीर से किडनी, हर्ट, लीवर, फेफड़े, त्वचा व पैनक्रियाज का प्रत्यारोपण किया जा सकता है. उन्होने एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि भारत में वर्तमान समय में करीब एक लाख 90 हजार लोगों को अंग प्रत्यारोपण की जरूरत है. प्रति तीन मिनट के भीतर इस वेटिंग लिस्ट सूची में बढ़ोतरी होती है. वहीं देश में मात्र 30 हजार लोग ही अंग प्रत्यारोपण करा पाते हैं. उन्होंने बताया कि भारत में किडनी डायलिसिस के सबसे अधिक मामले देखे जाते हैं. ऐसे में डायलिसिस पर सबसे अधिक खर्च किया जाता है. अगर इन मामलों में किडनी प्रत्यारोपण कर दिया जाये, तो डायलिसिस मरीज के परिजनों को अतिरिक्त खर्च नहीं करना पड़ेगा. डॉ घोष ने बताया कि भारत में किडनी का प्रत्यारोपण मरीज के परिजनों पर निर्भर होकर किया जाता है. उन्होंने कहा कि शव दान के मामले में बढ़ोतरी होने पर किडनी प्रत्यारोपण के मामले में बढ़ोतरी संभव है. डॉ अमित घोष ने केंद्र सरकार की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि भारत में हर साल करीब पांच लाख लोग सड़क हादसे के शिकार होते हैं. सड़क हादसों में मारे गये लोगों की औसत उम्र 20 से 50 के बीच पायी जाती है. डॉ ने बताया कि 20 से 50 वर्ष की उम्र का अंग प्रत्यारोपण के लिए काफी उतम माना जाता है, लेकिन जागरूकता के अभाव में ऐसा नहीं हो पा रहा है.

कैसे किया जाता है शवदान

डॉ घोष ने बताया कि कई बार सड़क हादसे के शिकार लोगों के सिर में चोट लगने के कारण मरीज का मस्तिष्क मृत अवस्था में पहुंच जाता है, जबकि मरीज के शरीर के अन्य भाग में रक्त का बहाव सामान्य रहता है. इस अवस्था में मरीज को मृत मान लिया जाता है. इस व्यक्ति का शव दान किया जा सकता है.